# विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

**तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र**

विज्ञप्ति ( साप्ताहिक ) : वर्ष 23 : अंक 47 : नई दिल्ली : 16-22 फरवरी 2018


परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए पश्चिम ओड़िशा के श्रद्धालु क्षेत्रों के निकट पधार गए हैं। लगभग ५० वर्षों बाद अपने आराध्य के आगमन से पश्चिम ओड़िशा के श्रद्धालुओं का उल्लास चरम पर है। वे लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की मार्ग सेवा में संलग्न हैं। मार्गवर्ती जैनेतर ग्रामीणों में पूज्यप्रवर के प्रति विशेष भक्ति का भाव देखने को मिल रहा है। कई बार पूज्यप्रवर के दर्शन और स्वागत हेतु मानों पूरे गांव ही उमड़ आते हैं। पश्चिम ओड़िशा की यात्रा की सम्पन्नता के उपरान्त पूज्यप्रवर २ अप्रेल २०१८ को अहिंसा यात्रा के तेरहवें राज्य के रूप में आंध्रप्रदेश में पावन प्रवेश करेंगे। इस राज्य के विशाखापट्टनम् में १८ अप्रेल को अक्षय तृतीया तथा २४ व २५ अप्रेल को क्रमशः पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव और पट्टोत्सव का भव्य आयोजन होगा।

## परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ओड़िशा में

### पूज्यचरणों से पावन हुआ अनगुल शहर

**४ फरवरी।** परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः खल्लारी से बड़केरा की ओर प्रस्थान किया। करीब १.२ कि.मी. का चक्कर लेकर आचार्यप्रवर अनगुल शहर में पधारे। पूज्यप्रवर के स्वागत में अनगुलवासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। आचार्यप्रवर के पदार्पण से प्रसूत हुआ उनका आंतरिक उल्लास उनकी प्रसन्न मुखाकृति पर मुखर बना हुआ था। जैनेतर जनता की उपस्थिति और उत्साह को देखकर यह अनुमान होना कठिन था कि अनगुल में तेरापंथ समाज के मात्र दो ही परिवार प्रवासित हैं।

विधायक श्री रजनीकांत सिंह भी पूज्यप्रवर के दर्शन कर मार्ग में कुछ समय तक पूज्यप्रवर के साथ चले। 'टुबे' गांव की घंटक वादन मंड़ली और 'कागुला' गांव की संकीर्तन मंडली के लोग पूज्यप्रवर के आगे-आगे चलते हुए पूज्यप्रवर के स्वागत में ढोल, मजीरा, थाली, शंख आदि बजा रहे थे। उन्हें विधि की जानकारी देकर 'ढोल' बजाने का निषेध किया गया। स्थानीय मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष श्री रणजीत मंडोडिया भी उत्साह से सराबोर बने हुए थे। उन्होंने पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में व्यवस्थाओं को अंजाम देने में अपना भरपूर सहयोग किया।

उमरा निवासी श्री हंसराज जैन परिवार के घर के समीप पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में एक संक्षिप्त कार्यक्रम समायोजित हुआ। जिसमें श्री संजीव जैन ने अपने आस्थासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त किए। परिवार की ओर से श्री संजय-सुनीता जैन ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में गीत का संगान किया।

ब्रह्मकुमारी संगीता ने पूज्यप्रवर का अभिनन्दन करते हुए कहा कि परम पिता परमात्मा की श्रेष्ठ संतान के रूप में मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिनन्दन करती हूं।

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जैन-जैनेतर जनता को पावन प्रेरणा प्रदान की। अनगुल स्थित जिंदल फैक्ट्री के मैनेजर श्री दामोदर मित्तल आदि ने पूज्यप्रवर को वंदन कर निवेदन किया--'सावित्रीजी जिंदल ने भी आपको वंदना निवेदित की है। उन्होंने आपको निवेदन करवाया है कि मुझे यदि पहले पता होता तो मैं भी आपके दर्शन के लिए जरूर अनगुल में आती।' आचार्यप्रवर ने श्री मित्तल को फरमाया कि 'हमारा अनगुल आना अचानक ही निर्धारित हुआ।'

कार्यक्रम के उपरान्त पूज्यप्रवर पुनः बड़केरा की ओर प्रस्थित हुए। कार्यक्रम स्थल के समीप श्री हंसराज जैन परिवार के व्यावसायिक प्रतिष्ठान के सम्मुख पूज्यप्रवर ने मंगलपाठ उच्चरित किया। अपने आराध्य को अपने शहर, अपने घर व व्यावसायिक प्रतिष्ठान के आसपास पाकर वह श्रद्धालु परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था। मुख्यतया इसी परिवार के अनुरोध पर पूज्यप्रवर के अनगुल पधारने का कार्यक्रम बना। करीब १४.० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आचार्यप्रवर बड़केरा में स्थित श्री जगन्नाथ हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जगत में छह द्रव्यों में एक है--काल। वह एक ऐसा तत्त्व है, जिसके बिना कोई कार्य नहीं किया जा सकता। कार्य काल सापेक्ष होता है। काल के तीन प्रकार हैं--अतीत, वर्तमान और अनागत। अतीत और अनागत अनंत हैं। वर्तमान समय थोड़ा ही होता है। वर्तमान काल हमारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतीत से कोई सबक, शिक्षण आदि लिया जा सकता है और अनागत काल की योजना बनाई जा सकती है, किन्तु जो करना है, वह वर्तमान में ही किया जा सकता है।

समय एक सम्पत्ति है, जो मानों हमें सहजतया प्राप्त होती है। प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन २४ घंटों का समय मिलता है। ध्यातव्य यह है कि इन चौबीस घंटों का कितना क्या उपयोग होता है। बादल तो सब जगह बरस सकता है, किन्तु कौन उसका कितना और क्या उपयोग करता है, यह ध्यान देने योग्य बात है। मनुष्य को समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए। जो समय का अच्छा उपयोग करता है, वह दुनिया का अच्छा व्यक्ति होता है। समय को सामय (रोग सहित) नहीं बनाना चाहिए। विकृतिपूर्ण गलत कार्य करेंगे तो समय मानों सामय बन जाएगा।

एक वर्ष का कितना महत्त्व होता है, उस विद्यार्थी से पूछा जा सकता है, जो वार्षिक परीक्षा में फेल हो गया हो। एक सप्ताह का कितना महत्त्व है, यह किसी साप्ताहिक पत्रिका के संपादक से पूछा जा सकता है। उसे हर सप्ताह सामग्री तैयार रखनी होती है। एक घंटे का कितना महत्त्व है, यह उससे पूछा जा सकता है, जो अपने श्रद्धेय की प्रतीक्षा में बैठा हो। एक मिनट का कितना महत्त्व है, यह उससे पूछा जा सकता है, जो एक मिनट की देरी के कारण वायुयान में यात्रा नहीं कर पाता। एक सेकेण्ड का कितना महत्त्व है, यह उससे पूछा जा सकता है, जो किसी दुर्घटना में एक सेकेण्ड इधर-उधर हो जाने से बाल-बाल बच गया हो।

समय का अपना महत्त्व है। जिन्दगी में जवानी चली जाती है तो वह लौट कर नहीं आती। जो समय अवशिष्ट रहा है, उसका अच्छा उपयोग करना चाहिए। आज करणीय किसी अच्छे कार्य को यथासंभव कल पर नहीं छोड़ना चाहिए।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से ग्रामीणों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए। श्री जगन्नाथ हाइस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री सुरेशचंद्र पंडा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

**५ फरवरी।** परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर प्रातः बड़केरा से जरपड़ा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती सान्तरापुर और मुंडासाही गांव के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। जरपड़ा की विशाल सब्जी मंडी के बीच से विहरणमान आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा मंडी में स्थित लोगों के लिए उत्सुकता का विषय बनी हुई थी, किन्तु जब उन्हें पूज्यप्रवर की प्रलंब यात्रा और उसके उद्देश्य के बारे में जानकारी मिल रही थी तो पूज्यप्रवर के प्रति सहज श्रद्धा का भाव उनके हृदय में प्रस्फुटित हो रहा था। यही कारण था कि लोगों के हाथ स्वतः जुड़ रहे थे और सिर श्रद्धा से प्रणत बन रहे थे। पूज्यप्रवर लगभग १६.२ किलोमीटर का प्रलंब विहार परिसम्पन्न कर जरपड़ा स्थित पतित पावन हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में श्रावक के तीन मनोरथों की चर्चा की। पतित पावन उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सुभाषचंद्र प्रधान ने आचार्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

**६ फरवरी।** परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः जरपड़ा से बोइन्डा की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती जेहरण देहरी के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्यप्रवर के चरणरज से पावन बने हुए राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर ५५ के विस्तार हेतु यत्र-तत्र कार्य चल रहा था। करीब १६.२ किलोमीटर का प्रलंब विहार सम्पन्न कर आचार्यप्रवर बोइन्डा स्थित रामदेव हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में वाणी को प्रशस्त बनाने के लिए मितभाषिता, मिष्टभाषिता, यथार्थभाषिता और परीक्ष्यभाषिता को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों ने पूज्यप्रवर से प्रेरणा प्राप्त कर संकल्पत्रयी स्वीकार की।

रामदेव हाइस्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती मनोरमा साहू ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने उल्लसित भावों को अभिव्यक्ति दी।

## गलती की पुनरावृत्ति नहीं, परिष्कार करें

**७ फरवरी।** परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बोइन्डा से हन्डपा की ओर प्रस्थान किया। मार्गवर्ती गोंडामुहां के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। कुछ लोगों ने नशा न करने की प्रतिज्ञा भी स्वीकार की। मार्ग में यत्र-तत्र बिखरे हुए सचित्त छिलकों सहित चावल के दानों के कारण आचार्यप्रवर की गति मंद बनी हुई थी। करुणानिधान आचार्यप्रवर जीव विराधना से बचने के लिए उन चावलों के स्पर्श से बचने का प्रयास करते हुए मंद-मंद गति से गतिमान थे। लगभग ७.५ कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर हन्डपा में स्थित महानदी हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्य से गलती हो सकती है। यहां तक कि प्रमत्त अवस्था में साधु से भी गलती हो सकती है। गलती का परिष्कार करने का प्रयास होना चाहिए। आदमी गलती की पुनरावृत्ति से बचने का प्रयास रखे तो सुधार हो सकता है।

गलती का परिष्कार हो जाए तो आदमी आगे बढ़ सकता है। दोष विशुद्धि के लिए सरलता का होना आवश्यक है। जो ऋजु होता है, वह शुद्ध बन सकता है। गलती हो जाए और कोई पूछे तो गलती को छुपाने के लिए झूठ बोल दिया जाए तो यह दूसरी गलती हो जाती है। व्रत-नियम में गलती हो जाए तो उसका प्रायश्चित्त ले लेना चाहिए। प्रायश्चित्त शोधन का एक उपाय है। दोष की विशुद्धि के लिए जो प्रयत्न किया जाता है, वह प्रायश्चित्त होता है। कपड़े के धब्बे लग जाते हैं तो वे धोने से साफ हो जाते हैं। इसी प्रकार संयम रूपी चद्दर के भी दाग लग सकते हैं। उनका प्रक्षालन कर उन्हें मिटाने का प्रयास करना चाहिए।

समुपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'विद्यार्थियों का लक्ष्य रहे कि उनका जीवन अच्छा बने। उनमें झूठ, चोरी आदि पापों से बचने के संस्कार आएं, यह वांछनीय है। जो व्यक्ति झूठ नहीं बोलता और चोरी नहीं करता, उसके जीवन में ईमानदारी रूपी गुण आ सकता है। जो विद्यार्थी परीक्षा में अवैध उपायों का सहारा लेता है, वह ईमानदारी से दूर रहता है। नकल करने वाला विद्यार्थी बड़ा होकर असली डॉक्टर, असली वकील आदि कैसे बन सकता है। नकल करके कोई नकली डॉक्टर, नकली वकील आदि बन जाए तो वह कितना क्या कार्य कर सकता है। नकली रोटी, नकली बिस्कुट, नकली पेन-पेन्सिल क्या काम के होते हैं। विद्यार्थियों में ईमानदारी के संस्कार रहने चाहिए। जीवन में नैतिकता का बड़ा महत्त्व होता है।'

## श्रावक की एक कसौटी है इन्द्रिय संयम

**८ फरवरी।** परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः हन्डपा से नाकची की ओर प्रस्थित हुए। आसमान में छाए बादलों के कारणों सूर्य काफी देर तक अदृश्य बना रहा। पूज्यप्रवर जिस राष्ट्रीय राजमार्ग पर गतिमान थे, उसके विस्तारीकरण का कार्य जारी था। उसे 'फोर लेन' बनाने के लिए परिपार्श्वस्थ सैंकड़ों विशाल वृक्षों को काटा गया है। मार्ग के परिपार्श्व में पड़े पेड़ों के विशाल तने किसी करुणार्द्र हृदय को झंकृत करने में समर्थ थे। सड़क के विस्तार के लिए कई घरों आदि को भी ध्वस्त किया गया है। करीब ८.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर नाकची में पधारे। माहेश्वरी हाइस्कूल में आज का प्रवास हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के शरीर में पांच इन्द्रियां होती हैं। न केवल आदमी के शरीर में, अपितु पशु के शरीर में भी पांच इन्द्रियां होती हैं। श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, रसन और स्पर्श-ये पांच इन्द्रियां ज्ञान का माध्यम बनती हैं। कानों से सुनकर, आंखों से देखकर, नाक से सूंघकर, जीभ से चखकर और त्वचा से स्पर्श कर पदार्थों का ज्ञान किया जाता है। ये पांच इन्द्रियां ज्ञान की माध्यम हैं तो पतन की माध्यम भी हैं। इन्द्रियों के कारण आदमी उत्पथ में भी जा सकता है।

आदमी को इन्द्रिय विषयों में ज्यादा आसक्ति नहीं रखनी चाहिए। उसे इन्द्रिय संयम का अभ्यास करना चाहिए। श्रावक की एक कसौटी है एक सीमा तक इन्द्रिय संयम। इन्द्रिय संयम करने वाला व्यक्ति बड़ा बन सकता है। बच्चों में भी इन्द्रिय संयम का संस्कार जागना चाहिए। वह उनके विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।'

पूज्यप्रवर की प्रेरणा से समुपस्थित ग्राम्यजनों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

माहेश्वरी उच्च विद्यालय के प्राचार्य श्री बटकृष्ण प्रसाद साहू ने कहा--'हमारे विद्यालय के लिए आज का दिन बहुत शुभ है। आचार्यश्री के पधारने से हमारा विद्यालय कृतकृत्य हो गया। आचार्यश्री ने अभी जो संयम का संदेश दिया है, वह विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण की दृष्टि से बहुत उपयोगी है। मैं आचार्यश्री का सादर स्वागत करते हुए उनके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूं।'

## महात्मा गांधी के बाद पुनः आया एक महापुरुष

**९ फरवरी।** परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः नाकची से बामुर की ओर विहार किया। आज से वनीय क्षेत्र प्रारम्भ हो गया। बताया गया कि इस वन में बाघ, हाथी, भालू आदि जानवर निवास करते हैं। यदा-कदा वे परिपार्श्वस्थ गांवों, खेतों आदि में भी आ जाते हैं। मार्गवर्ती 'फूलाब' गांव में स्थानीय लोगों और प्राथमिक के विद्यार्थियों को पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। 'सरगीपाली जैस ग्राम' में ग्रामीण लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ समूहबद्ध रूप में खड़े थे। आचार्यप्रवर के निकट पधारते ही उन्होंने ओड़िया भाषा में बुलंद स्वर में घोष उच्चरित किया--'अहिंसा यात्रा सफल होउ।' ग्रामीण लोग बोले--'आमे माने आजी बहुत खुश आछुं। आपणेकर जात्रा सफल हो।' हम सभी आज बहुत खुश हैं। आपकी यात्रा सफल हो' पूज्यप्रवर ने ग्रामीणों को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। हायरामुंडा, गुरुजोग और डालवपका' के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। स्वामी नारायण संप्रदाय के स्वामी पूर्णप्रकाशदासजी वाहन से अपने गंतव्य की ओर जा रहे थे। उन्होंने जब पूज्यप्रवर को देखा तो वे वाहन रुकवाकर उससे नीचे उतरे और पूज्यप्रवर को वंदन किया।

पूज्यप्रवर लगभग १५ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर बामुर में पधारे। आचार्यप्रवर के स्वागत में खड़े

बामुरवासियों में से एक प्रौढ़ व्यक्ति बोला--'हमारे इस गांव में सन् १९३४ में महात्मा गांधी आए थे। उन्होंने उस समय एक रात्रि यहीं निवास किया और नशामुक्ति की बात भी की थी। आज अहिंसा यात्रा के माध्यम से फिर वही संदेश लेकर एक रात्रि का प्रवास करने के लिए आप यहां आए हैं। मानों इतिहास दुहरा रहा है। हम आपको अपने बीच पाकर बहुत खुश हैं।' पूज्यप्रवर युवा ज्योति हाइस्कूल (करुणा विहार) में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'शास्त्रकार ने एक श्लोक में चार शिक्षाएं दी हैं--

१. 'निद्दं च न बहुमन्नेज्जा।'- नींद को ज्यादा बहुमान नहीं देना चाहिए। शारीरिक आवश्यकता से नींद तो लेनी होती है, किन्तु ज्यादा नींद या आराम करना विकास में बाधा है। आलस्य जिस शरीर में रहता है, उसी का नुक्सान कर देता है। आदमी को आलस्य से बचना चाहिए।

२. 'संपहासं विवज्जए'- आदमी को ज्यादा नहीं हंसना चाहिए। ज्यादा हंसी-मजाक में रहने से आदमी का स्तर गिर सकता है। गंभीर और अच्छा कार्य करने वाले व्यक्ति का स्तर उच्च हो सकता है।

३. 'मिहोकहाहिं न रमे'- मैथुनकथा में ज्यादा रस नहीं लेना चाहिए।

४. 'सज्झायम्मि रओ सया'- आदमी को स्वाध्याय में रत रहना चाहिए। कंठस्थ ज्ञान का पुनरावर्तन करते रहना चाहिए। उसके बिना वह ज्ञान विलुप्त हो सकता है।'

पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्राप्त कर समुपस्थित ग्राम्यजनों, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने संकल्पत्रयी स्वीकार की।

युवा ज्योति हाइस्कूल के प्रधानाध्यापक श्री ऋषिकेश साहू ने पूज्यप्रवर के स्वागत में कहा--'अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ताओं ने जब हमसे संपर्क कर आचार्यश्री महाश्रमणजी एवं उनके संघ के रहने के लिए स्थान उपलब्ध कराने की बात कही तो मुझे लगा कि हमारे विद्यालय का भाग्योदय हुआ है। आचार्यश्री के पदार्पण से हमारा विद्यालय सचमुच पावन हो गया। मैं समस्त विद्यालय परिवार की ओर से आपका सादर स्वागत करता हूं। आपकी अहिंसा यात्रा सामाजिक स्वस्थता और समरसता को पुनः प्रतिष्ठित करने वाली है। आप इसके द्वारा भारत के गौरव को शिखर पर पहुंचा रहे हैं।'

रात्रिकालीन कार्यक्रम में स्थानीय ग्रामीणों के साथ आसपास के गांवों के लोगों की भी अच्छी उपस्थिति रही। कई लोग करीब पांच-सात किलोमीटर दूर से आए थे। उनमें से कुछ युवक पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में उपस्थित हुए और जैन धर्म आदि से संबंधित अपनी जिज्ञासाएं पूज्यप्रवर के समक्ष रखी। आचार्यप्रवर ने उन्हें जैन धर्म आदि के विषय में कुछ विस्तारपूर्वक अवगति प्रदान की। वे बोले--'आपके दर्शन कर और आपके बारे में जानकर हमें बहुत अच्छा लगा। आप बहुत कठोर जीवन जी रहे हैं।'

## सघन वन में अहिंसा यात्रा

**१० फरवरी।** परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर बामुर से लुहापंक की ओर प्रस्थित हुए। डोपामुंडा गांव के पीयूपी स्कूल के शिक्षकों और विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उनके निकट अपने चरण थाम लिए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री सच्चिदानंद प्रधान आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए बोले--'गुरुजी! हमारी धरती पर आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। आपकी यह अहिंसा यात्रा व उसके तीनों उद्देश्य आज के युग में बहुत जरूरी हैं। हम सभी मंगल कामना करते हैं कि आपकी यात्रा सफल हो, मंगलमय हो। आप हमें आशीर्वाद प्रदान करें।' आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री ने विद्यार्थियों व शिक्षकों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देकर संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। हरिराजपुर के ग्रामीणों को

भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सुअवसर मिला। आचार्यप्रवर के निर्देश पर मुख्यमुनिश्री ने उन्हें अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए।

पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान अनगुल जिले की सीमा को अतिक्रांत कर संबलपुर जिले में प्रवेश किया। इसीके साथ आचार्यप्रवर की पूर्वी ओड़िशा की यात्रा परिसम्पन्न और पश्चिमी ओड़िशा की यात्रा प्रारम्भ हो गई। संबलपुर जिले में वन कुछ सघन हो गया। दूर तक सघन झाड़ियों और चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ दृष्टिगोचर हो रहे थे। यत्र-तत्र लगे हुए बोर्ड हाथी आदि वन्य प्राणियों के आवागमन के मार्ग का संकेत लिए हुए थे। इस भयावह जंगल में भी अपने महानायक के कुशल नेतृत्व में अहिंसा यात्रा का कारवां बेखौफ बढ़ रहा था। जंगल के शांत वातावरण में झिंगुरों की तीक्ष्ण, किन्तु कर्णप्रिय आवाज प्रकृतिप्रिय मानव को लुभाने में सक्षम प्रतीत हुई। परिपार्श्वस्थ पहाड़ों के कारण मार्ग आरोहों-अवरोहों से युक्त बना हुआ था। वन्य पथ से करीब १२.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर लुहापंक में स्थित स्वामी हरिहरानंद हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन शासन में सामायिक की बात आती है। जो व्यक्ति अनगार 'साधु' बनता है, वह सामायिक का व्रत स्वीकार करता है। उसका यह व्रत जीवन भर के लिए होता है। वह सर्व सावद्य योग का तीन करण, तीन योग से प्रत्याख्यान करता है। इस दृष्टि से साधु की सामायिक बड़ी होती है। साधु के सर्वविरति सामायिक होती है, जबकि गृहस्थ के देशविरति सामायिक होती है। गृहस्थ की नवमें व्रत की सामायिक एक मुहूर्त (४८ मिनिट) की होती है। गृहस्थ रोज एक सामायिक कर ले तो एक अच्छा उपक्रम हो सकता है। सामायिक समता की साधना है। जिसमें समता की आय हो, वह सामायिक होती है। समता धर्म है और विषमता पाप का आधार है।

आज शनिवार है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी श्रावक-श्राविकाएं यथासंभव, यथानुकूलता शनिवार को सायं सात बजे से आठ बजे के बीच सामायिक का अभ्यास करें, यह काम्य है। न केवल गुरुकुलवास में, अपितु बाहर भी शनिवार की सामायिक का अच्छा क्रम चलना चाहिए और उसमें यथासंभव तेरापंथ प्रबोध का स्वाध्याय होना चाहिए। इस प्रकार सप्ताह में एक सामायिक तो काफी आसानी से हो सकती है। रोज एक सामायिक हो तो और भी अच्छी बात हो जाती है। रोज दो कर ली जाए तो और भी ज्यादा अच्छी बात हो जाती है। सामायिक बहुत अच्छा अनुष्ठान है। उसमें यथासंभव प्रवचन श्रवण आदि का लाभ भी लेना चाहिए। सामायिक करने से संवर होता है और उसमें स्वाध्याय और प्रवचन श्रवण आदि हो जाए तो साथ में निर्जरा भी हो सकती है। सामायिक में पारिवारिक, आर्थिक आदि चिंता से मुक्त रहना चाहिए।'

आयुष्य निरंतर घटता जा रहा है। आदमी को धर्मध्यान की कमाई भी करनी चाहिए। सामायिक करने पर श्रावक भी साधु जैसा बन जाता है। सामायिक की साधना का कितना महत्त्व है। यह मोक्ष की साधना का मार्ग है। इसे चौदह पूर्वों का सार तक कह दिया गया। साधु अपनी सामायिक के प्रति जागरूक रहें और गृहस्थ भी यथासंभव सामायिक की साधना करते रहें।'

पूज्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त समुपस्थित ग्रामवासियों, शिक्षकों और विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया तो वे अपने स्थान पर खड़े होकर कृतसंकल्प बने।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री कैलाशचन्द्र बेहरा ने आचार्यप्रवर के स्वागत में कहा--'आज हमारे लिए परम आनंद का दिन है कि परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का आगमन हमारे विद्यालय में हुआ है। आपके पदार्पण से हमारी भूमि पवित्र हो गई। आपका संदेश हम सभी यदि अपने-अपने जीवन में उतार लें तो हमारा जीवन सार्थक बन जाए।'

आज दिन-रात्रि में ग्रामीण जनता बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुई। दर्शनार्थियों

पर आचार्यप्रवर यथावसर आशीष वृष्टि कर रहे थे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में ग्राम्यजनों की अच्छी उपस्थिति रही।

## सुहावने मौसम, प्राकृतिक सुषमायुक्त वन्यपथ और सुरम्य वातावरण में बढ़ा अहिंसा यात्रा का कारवां

**११ फरवरी।** परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः लुहापंक से बडबहाल के लिए प्रस्थान किया। आज आसमान में बादल छाए हुए थे। इस कारण मौसम कुछ सुहावना बना हुआ था। ऐसे मौसम में जंगल के प्राकृतिक वातावरण में अध्यात्म जगत के महासूर्य के नेतृत्व में हो रही पदयात्रा का कारवां और भी मनहारी लग रहा था। विहार पथ के आसपास स्थित विभिन्न जातियों के हजारों विशाल वृक्षों के पके हुए पत्ते मंद-मंद हवा के साथ टूट कर गिर रहे थे। हजारों पत्ते विहार पथ पर भी बरस रहे थे। ऐसा लग रहा था, प्रकृति स्वयं पलक-पांवड़े बिछा कर महातपस्वी आचार्यप्रवर का अभिनन्दन कर रही है। सांय-सांय करती हवा के कारण हिल रही डालियों और पत्तों से होने वाली आवाज प्रकृति के मधुर संगीत की तरह प्रतीत हो रही थी। चूंकि स्थानीय जनता के कथानुसार इस जंगल में बाघ, हाथी, भालू आदि वन्य प्राणियों का भी निवास है। इसलिए स्वभाविक रूप से आंखें सघन वृक्ष राशि और झाड़ियों के बीच उन्हें खोजने में लगी हुई थीं, किन्तु वे वन्यप्राणी जंगल के भीतरी भाग में ज्यादा रहते हैं। राजमार्ग के निकट तो उनका यदा-कदा ही आना होता है। इसलिए आंखों की खोज सफल नहीं हो पाई। मन को मोहने में सक्षम सुहावने मौसम, प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण वन्यपथ और सुरम्य वातावरण में भी आचार्यप्रवर निर्विशेष भाव (समत्वभाव) से गंतव्य की ओर गतिमान थे।

पूज्यप्रवर मार्गवर्ती रेडाखोल में एक वयोवृद्ध व्यक्ति के परिजनों की प्रार्थना पर मार्ग के दांयीं ओर स्थित उनके घर में पधारे और उस वयोवृद्ध व्यक्ति को दर्शन दिए। आचार्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर वह जैनेतर परिवार अभिभूत था। वयोवृद्ध व्यक्ति ने अपने पैरों का कष्ट पूज्यप्रवर के समक्ष व्यक्त किया तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंत्र जप की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने सभी परिजनों को नशामुक्ति की प्रेरणा भी प्रदान की। रेडाखोल में संत भीम भोई की प्रतिमा के परिपार्श्व में स्थानीय नागरिकों ने पूज्यप्रवर के निकट आकर वंदन किया। आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की। एक व्यक्ति बोला--गुरुजी! कुछ शिक्षा दीजिए।' आचार्यप्रवर ने उनके अनुरोध को स्वीकार कर संक्षिप्त संबोध प्रदान किया। संत भीम भोई महिमा संप्रदाय के संन्यासी थे। एक संत के रूप में उनकी पहचान इस पूरे क्षेत्र में विशेष रूप से बनी हुई है। कहते हैं वे प्रज्ञाचक्षु (अचक्षु) थे, किन्तु उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार किया।

विहार के दौरान शुण्डीमुण्डा के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। शुण्डीमुण्डा अनाथ कन्या आश्रम की कन्याओं ने आचार्यप्रवर को वंदन किया तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आश्रम का संरक्षक विकलांगता के कारण 'ट्राइसाइकिल' पर बैठकर पूज्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुआ। आचार्यप्रवर ने उसके निकट अपने चरण थामकर उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब १४.० कि.मी. का विहार सम्पन्न कर बडबहाल स्थित पंचखण्ड हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री शुभ्रांशु कुमार प्रधान आदि ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

## फलवान बने दुर्लभ मानव जीवन

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'चार गतियों की चौरासी लाख जीव योनियां बताई गई हैं। इनमें संसारी आत्मा भ्रमण करती रहती है। भ्रमण करते-करते किसी जीव को मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। इसे प्राप्त कर भी जो व्यक्ति धर्म की आराधना नहीं करता और उसे प्रमाद में गंवा देता है, वह तो मानों मूढ़ आदमी होता है। कोई आदमी अति श्रम से प्राप्त चिंतामणि रत्न को समुद्र में फेंक कर सांसारिक दृष्टि से मूर्ख कहलाता है, वैसे ही जो व्यक्ति दुर्लभ मनुष्य जीवन को पापों

में गंवा देता है, वह भी मूर्ख होता है।

मानव जीवन एक प्रकार का वृक्ष है। वृक्ष की सार्थकता इसमें होती है कि वह छाया दे या फल दे। जो छाया और फल न दे तो उस वृक्ष की कितनी क्या सार्थकता हो सकती है। मानव जीवन रूपी वृक्ष के छह फल लगने चाहिए--

१. जिनेन्द्र पूजा-वीतराग तीर्थंकरों की स्तुति-अर्चना करनी चाहिए। दुनिया में कम से कम बीस तीर्थंकर तो हमेशा रहते हैं। तीर्थंकर तो धार्मिक जगत में सर्वोच्च व्यक्ति होते हैं। वे अध्यात्म जगत के अधिकृत प्रवक्ता होते हैं।

२. गुरु की पर्युपासना-धर्माचार्य तीर्थंकर के प्रतिनिधि होते हैं। उनकी पर्युपासना करनी चाहिए।

३. सत्त्वानुकंपा-किसी भी प्राणी को कष्ट नहीं देना चाहिए। सभी प्राणियों के प्रति दया रखनी चाहिए।

४. शुभ पात्र दान- शुद्ध साधु को शुद्ध दान देने की भावना रखनी चाहिए।

५. गुणानुराग- दूसरों के गुणों के प्रति प्रमोद भाव रखना चाहिए। उन्हें यथासंभव ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

६. आगमश्रुति- आगम वाणी का श्रवण करना चाहिए। ये छह फल मानव जीवन रूपी वृक्ष के लग जाते हैं तो यह जीवन सुफल बन सकता है।'

आचार्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों, शिक्षकों व अन्य ग्राम्यवासियों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति व प्रेरणा प्रदान करते हुए संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई।

विद्यालय के प्राचार्य श्री शुभ्रांशु कुमार प्रधान ने कहा--'मैं अपने इस विद्यालय प्रांगण में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। आज हमारे अंचल और हमारे विद्यालय पर आपके आशीर्वाद की बरसात हुई है। मैं आचार्यश्री से प्रार्थना करता हूं कि आप ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि हम अंचलवासियों का जीवन पवित्र बने और मेरे विद्यार्थियों ने जो संकल्प स्वीकार किए हैं, वे उनका निष्ठा से पालन करें, ताकि उनका भविष्य मंगलमय हो।'

रात्रि में आसमान में कड़कती हुई बिजलियां वर्षा का संकेत करने लगीं। कुछ वेग के साथ बहती हुई ठंडी हवा के कारण पतझड़ की कुछ गति भी बढ़ गई। इस बीच बिजली भी गुल हो गई तो चारों ओर अंधेरा छा गया। सुनसान वातावरण में घने जंगल में होने का अहसास और भी बढ़ गया। मानवों और यंत्रों के शोरगुल से दूर यह क्षेत्र और यह मौसम प्रकृति प्रिय मानवों के लिए सहज आनंद का निमित्त बना हुआ था। कुछ ही समय में वर्षा भी हुई, किन्तु उसका वेग और कालमान अधिक नहीं रहा। वर्षा से आर्द्र बनी मिट्टी की सौंधी सुगंध वातावरण में महकने लगी।

## पतझड़ में 'दुमपत्तए पडुंयए जहा...' श्लोक का साक्षात्कार

**१२ फरवरी।** परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः बडबहाल से कदलीगढ़ की ओर प्रस्थित हुए। रात्रि में हुई हल्की वर्षा के कारण सूर्योदय से पूर्व वातावरण में हल्की ठंड व्याप्त थी, किन्तु सूर्योदय के उपरान्त वह क्रमशः काफूर होती गई। कुछ ही समय उसका स्थान हल्की गर्मी ने ले लिया। क्रमशः बढ़ता हुआ सूरज का आतप वन में स्थित हजारों वृक्ष के कारण नियंत्रित बना हुआ था। पतझड़ के कारण विहार पथ के आसपास और वृक्षों के नीचे का स्थान पत्तों से पूरी तरह पटा हुआ था। इस कारण वहां की भूमि अदृश्य-सी बनी हुई थी। ग्रामीण अपने-अपने घरों के बाहर उन पत्तों को बुहार कर एकत्रित कर रहे थे और उन्हें आग लगा रहे थे। पत्तों के गिरने का क्रम आज भी जारी था। उन पीले पत्तों को गिरता देखकर 'उत्तरज्झयणाणि' के दसवें अध्ययन का प्रथम श्लोक--'दुमपत्तए पंडुयए जहा...' श्लोक अनायास स्मृति पटल पर आ रहा था।

मार्गवर्ती पंखीमार और मधुपुर में स्थान-स्थान पर पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ खड़े ग्रामीण समूहों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामे। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री और मुनिवृन्द ने ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी देकर संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। पूज्यप्रवर ने ग्रामीणों को जैन धर्म के विषय में अवगति प्रदान की।

मार्ग के परिपार्श्वस्थ एक मकान के छत पर संभवतः 'महिमा' संप्रदाय के संन्यासी भोजन कर रहे थे। उन्होंने पूज्यप्रवर को देखा तो कई संन्यासी भागते हुए नीचे आए। उनको आते हुए देखकर आचार्यप्रवर ने अपने चरण थाम लिए। उन संन्यासियों ने नीचे आकर पूज्यप्रवर को वंदन किया। लोगों ने उनके विषय में जानकारी देते हुए बताया कि ये संन्यासी भी पैदल चलते हैं। आचार्यप्रवर १०.० कि.मी. का विहार कर कदलीगढ़ स्थित हाइस्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री वीरेन्द्र कुमार साहू आदि ने आचार्यप्रवर की भावपूर्ण अगवानी की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में 'सण्णा' शब्द प्राप्त होता है। हिन्दी में जिसे संज्ञा कहा जाता है। संज्ञा का सामान्य अर्थ है--नाम। जैन वाङ्मय में संज्ञा शब्द का एक अर्थ है--संवेगात्मक ज्ञान। इसे चित्तवृत्ति अथवा मनोवृत्ति के रूप में संभवतः समझा जा सकता है। आदमी के भीतर कुछ वृत्तियां होती हैं--

१. आहार संज्ञा। आदमी के भीतर भोजन की अभिलाषा और आकर्षण हो सकता है। आहार का संयम करना चाहिए। अति भोजन और अविवेकपूर्ण भोजन से बचना चाहिए। हितभोजी, मितभोजी और ऋतभोजी (नैतिकता से अर्जित अर्थ से प्राप्त भोजन करने वाला) व्यक्ति निरोग हो सकता है। आदमी आकर्षण और आसक्ति से वशीभूत होकर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक वस्तु को भी ज्यादा मात्रा में खा लेता है तो स्वास्थ्य में कठिनाई की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

२. भय संज्ञा। आदमी को अनुप्रेक्षा आदि के द्वारा अभय का भाव पुष्ट करने का प्रयास करना चाहिए। भय की स्थिति सामने आने पर तो उसका समुचित प्रतिकार करने का प्रयत्न करना चाहिए। भय पर विजय पाने का अभ्यास करना चाहिए।

३. मैथुन संज्ञा। आदमी इस संज्ञा पर भी नियंत्रण करने का प्रयास करे, यह काम्य है।

४. परिग्रह संज्ञा। धन, दौलत, जमीन आदि के प्रति आसक्ति को भी नियंत्रण में रखना चाहिए। इस प्रकार चारों संज्ञाओं पर नियंत्रण कर आत्मा मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकती है।'

पूज्यप्रवर से उत्प्रेरित होकर ग्रामवासियों, विद्यार्थियों और शिक्षकों ने आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

कदलीगढ़ उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री वीरेन्द्र कुमार साहू ने कहा--'मैं अहिंसा यात्रा प्रणेता गुरुजी का हमारे इस प्रांगण में हार्दिक स्वागत करता हूं। आप जैसी दीप्तिमान, सुशांत और पवित्र आत्मा के दर्शन कर हम सभी धन्य हैं। आप भारतीय ऋषि परंपरा के गौरवपूर्ण व्यक्तित्व हैं। मानवता के पुनर्जागरण के लिए आप द्वारा किया जा रहा प्रयत्न स्तुत्य है।'

**महातपस्वी आचार्यप्रवर के दरबार में उमड़ा जैनेतर जनता का सैलाब**

**१३ फरवरी।** परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः कदलीगढ़ से टेभापदर की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान कदलीगढ़ के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। 'धवला खमण' में बड़ी संख्या में खड़े ग्रामीणों के निकट पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामे। ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार एक मुनिजी ने

लोगों को अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी दी और मुख्यमुनिश्री ने संकल्पत्रयी स्वीकार करवाई। आज का मार्ग गत दिनों की अपेक्षा कुछ संकरा था, किन्तु इस पथ पर वाहनों का आवागमन बहुत कम हो रहा था। मार्ग के दोनों ओर सघन वृक्ष राशि थी। इन वृक्षों में इमली के वृक्षों की बहुलता थी। इमलियां टूट-टूटकर मार्ग पर यत्र-तत्र गिरी हुई थीं और मार्ग के दोनों ओर सचित्त मिट्टी भी बिछी हुई थी। इस कारण पूज्यप्रवर की गति कुछ मंद बनी हुई थी।

पूज्यप्रवर ने संबलपुर जिले से सुवर्णपुर जिले में प्रवेश किया। बरियामुण्डा में भी ग्रामीण बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े थे। आचार्यप्रवर के स्वागत में उन्होंने जल छिड़ककर दीपक, फूल, चावल, कलश, नारियल आदि सजा रखे थे। पूज्यप्रवर के पधारते ही वे मार्ग पर जल का सिंचन करने लगे। आचार्यप्रवर ने वात्सल्य के साथ ऐसा न करने के लिए समझाया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर एक मुनिजी ने उन्हें अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी। तत्पश्चात् मुख्यमुनिश्री ने अहिंसा यात्रा के संकल्प करवाए। आचार्यप्रवर ने उपस्थित जनता को पावन आशीर्वाद प्रदान किया। गरियामुण्डा में भी ग्रामीण दर्शनार्थियों की भीड़ के समीप आचार्यप्रवर ने अपने चरण थामे तो ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार उन्हें अहिंसा यात्रा की अवगति दी गई और संकल्पत्रयी स्वीकार कराई गई। आचार्यप्रवर ने ग्रामीणों पर आशीष वृष्टि की।

आज का विहार मार्ग भी प्रायः वन्यपथ के रूप में था, किन्तु जहां-जहां आबादी क्षेत्र था, वहां-वहां दर्शनार्थियों की भीड़ खड़ी थी। गंतव्य की निकटता के साथ भीड़ क्रमशः बढ़ती जा रही थी। 'डुलेश्वर' और 'डुरडुरा' गांवों में खड़े ग्रामीणों के निकट भी पूज्यचरण रूके तो ग्राम्य महिलाओं ने अपने पारंपरिक अंदाज में 'हुलाहुली' कर पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। मुनिवृंद ने ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति दी और मुख्यमुनिश्री ने अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण करवाए। आचार्यवर अपने दोनों कर कमलों से ग्रामवासियों को आशीर्वाद प्रदान किया।

टेभापदरवासी आचार्यप्रवर की अगवानी में दूर-दूर तक पहुंच रहे थे। आचार्यप्रवर के पधारते ही पूरे गांव में अलग ही माहौल बन गया। हर कोई आचार्यप्रवर के दर्शन के लिए बेताब था। विद्यालय परिसर के आसपास तो मानों दर्शनार्थियों का सैलाब उमड़ आया। ग्रामीण महिलाएं 'हुलाहुली' के द्वारा आचार्यप्रवर का अभिनन्दन कर रहीं थी तो पुरुषों के लिए आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना का माध्यम बने जयघोष 'जय-जय ज्योतिचरण। जय-जय महाश्रमण' से वातावरण गुंजायमान हो उठा। आचार्यप्रवर अपने करकमलों से दर्शनार्थियों पर आशीष वृष्टि करते हुए टेभापदर स्थित सरकारी यूपी स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आज का विहार करीब १६.७ कि.मी. का रहा।

विद्यालय परिसर छोटा था। इसलिए विद्यालय के बाहरी भाग में आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम समायोजित हुआ। कार्यक्रम में सैंकड़ों ग्रामवासी उपस्थित थे। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'दुनिया में सामान्यतया सभी जीव जीना चाहते हैं, कोई मरना नहीं चाहता। इसलिए आदमी को प्राणियों के वध से यथासंभव बचने का प्रयास करना चाहिए। अहिंसा को परम धर्म कहा जाता है और यह धर्म हमेशा था और हमेशा रहेगा। मनुष्य आदि की हिंसा नरक गति में उत्पन्न होने का एक कारण है। अमर्यादित हिंसा और अमर्यादित परिग्रह आदमी को नरक की ओर धकेलने वाले होते हैं। मनुष्य इनसे बचने का प्रयास करे, यह काम्य है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज इस गांव में एक साथ इतनी चारित्रात्माओं का आना हुआ है। एक साथ इतनी चारित्रात्माओं के पदार्पण का मौका कब-कब मिलता होगा। यह गांव के लिए बहुत अच्छी बात होती है कि उसे एक साथ इतने साधु-साध्वियों के पदार्पण का मौका मिलता है।'

आचार्यप्रवर की प्रेरणा से सैंकड़ों ग्रामीणों ने अपने स्थान पर खड़े होकर अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए। संकल्प ग्रहण के उपरान्त ग्रामीण महिलाओं ने 'हुलाहुली' के द्वारा अपनी खुशी को अभिव्यक्त किया।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री संतोष कुमार साहू ने गदगद स्वर में कहा--'आज का दिन हमारे विद्यालय के लिए मंगलमय दिन है। मुझे जबसे आपके आगमन की सूचना मिली, मैं बेसब्री से इस शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा कर रहा था। आज आपके रूप में एक महापुरुष को अपने आंगन में पाकर मैं आत्मविभोर हूं। मेरे हृदय में आज प्रसन्नता ही प्रसन्नता हिलोरे मार रही है। मेरे गांव और मेरे विद्यालय की मिट्टी आपके चरणों के स्पर्श से पावन बन गई है। आपने ४२,००० से ज्यादा किलोमीटर की पदयात्रा कर ली है, यह हमारी कल्पना से बाहर की बात है। मैं प्रतिज्ञा लेता हूं कि मैं मेरे विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के तीनों सूत्रों की शिक्षा देता रहूंगा।'

आज दिन-रात्रि में हजारों ग्रामीण लोग आचार्यप्रवर के दर्शन से लाभान्वित हुए। ज्यों-ज्यों लोगों को पूज्यप्रवर के पदार्पण की सूचना मिल रही थी, लोग कई किलोमीटर दूर स्थित अपने-अपने गांवों से आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंच रहे थे। वृद्ध हों या जवान, महिलाएं हों या पुरुष सबमें आचार्यप्रवर के दर्शन की ललक स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही थी। आचार्यप्रवर यथावसर दर्शनार्थियों पर आशीष वृष्टि कर रहे थे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी ग्रामीणों की विशाल उपस्थिति रही। कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर के दर्शन के लिए ग्रामीणों की लंबी कतार लग गई। लोगों में पूज्यप्रवर के दर्शन के लिए होड़-सी मची हुई थी। आचार्यप्रवर ने दर्शनार्थियों को मंगल आशीष प्रदान की। आचार्यप्रवर का त्याग-तपोमय पावन व्यक्तित्व आगंतुकों को अत्यधिक प्रभावित कर रहा था। यही कारण था कि पूज्यप्रवर के दर्शन के बाद लोगों के दिल में आचार्यप्रवर के प्रति भक्ति और गहराती-सी प्रतीत हो रही थी।

आज सायं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पश्चिमी ओड़िशा प्रान्त प्रचारक श्री विष्णुजी पात्र व विभाग प्रचारक श्री चक्रधरपाणी ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

रात्रि में स्थानीय यूथ स्टूडेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री विजय अग्रवाल आदि पूज्य सन्निधि में पहुंचे। उन युवकों में भी आचार्यप्रवर के प्रति सहज भक्ति का भाव दृष्टिगोचर हुआ। उन्होंने पूज्यप्रवर से गांव के भीतर पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर उन्हें मंद मुस्कान के साथ पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

## भगवनू! मोर कल्याण कर

३ फरवरी को मध्याह्न में एक वृद्ध महिला आचार्यप्रवर के दर्शन करने आई। वह आचार्यप्रवर के दर्शन कर भाव-विभोर हो गई और ओड़िया भाषा में बोलने लगी--'आपणंकर दर्शनेकरी एमिति लागीला आजी साख्यात भगवानंकर दर्शन हेइ गला। भगवनू! मोर कल्याण कर।' (आपके दर्शन कर ऐसा लगा कि आज साक्षात् भगवान के दर्शन हो गए। भगवनू! मेरा कल्याण करो।) पूज्यप्रवर ने उसे आशीर्वाद प्रदान किया। उस समय साध्वीवर्याजी पूज्य सन्निधि में उपस्थित थीं। उन्होंने आचार्यप्रवर के समक्ष अपनी जिज्ञासा रखते हुए पूछा--'गुरुदेव! हम लोगों के लिए आप भगवान हैं। क्योंकि हम तो आपके व्यक्तित्व से परिचित हैं, लेकिन इस महिला ने आपको कभी देखा नहीं, फिर इतनी श्रद्धा कैसे?'

आचार्यप्रवर--'कभी-कभी संतों की तपस्या देखकर व्यक्ति की श्रद्धा जाग सकती है तो कभी उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर श्रद्धा जाग सकती है।'

साध्वीवर्याजी--'किन्तु गुरुदेव! एक ही दिन में कोई व्यक्ति किसी को भगवान कैसे मान सकता है?'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आचार्यप्रवर--'ऐसा लगता है कि व्यक्ति के पूर्व जन्मों के कर्मों का भी कोई संबंध होता है कि संतों को देखकर उसके संस्कार उद्‌बुद्ध हो जाती है।'

**स्मृति-संबल**

• बेलगांव (ओड़िशा) निवासी श्रीमती अंगुरीदेवी जैन (धर्मपत्नी स्व. श्री हंसराज जैन) का निधन हो गया। वे बारहव्रती श्राविका थी। पति के अल्पायु में स्वर्गवास होने के बाद भी पूरे परिवार का सारा जिम्मा उठाया एवं पूरे परिवार में धर्म के गहरे संस्कार भरे। प्रतिदिन सामायिक, मौन एवं द्रव्यों में सीमा रखती थी। प्रायः प्रतिवर्ष सपरिवार गुरुदर्शन एवं बेलगांव के आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं के रास्ते की सेवा किया करती थी। गुरुदेव तुलसी के बेलगांव प्रवास के दौरान निकटता से सेवा-उपासना का मौका मिला। पूरे परिवार में धर्म के गहरे संस्कार हैं।

• गंगाशहर निवासी श्रीमती पानादेवी दफ्तरी (धर्मपत्नी स्व. चांदमलजी दफ्तरी) का देहावसान हो गया। अपने शताधिक जीवन में धर्म को केवल स्वीकारा ही नहीं, अपितु धार्मिक जीवन भी जीया। नवकारसी, जमींकंद वर्जन, रात्रि भोजन विरमण आदि अनेक प्रत्याख्यानों का लंबे काल से पालन किया। साध्वीश्री सोमयशाजी, साध्वी जयंतीश्रीजी एवं साध्वी श्री ऋषिप्रभाजी आपके परिवार से संबद्ध साध्वियां धर्मसंघ में साधनारत हैं। आपके सुपुत्र सुमेरमल जी ने आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। पूरे दफ्तरी परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

• खरनोटा निवासी एवं बड़ौदा-सूरत-बेंगलुरु प्रवासी श्री घीसूलालजी बोल्या का देहावसान हो गया। वे बड़े सरल, सेवाभावी एवं स्पष्टवादी श्रावक थे। उन्होंने अपना अधिकांश जीवन खरनोटा में ही व्यतीत किया। क्योंकि उन्हें वहां चारित्रात्माओं के सेवा-उपासना का लंबा प्रवास प्राप्त होता था। आमेट चतुर्मास करने वाली चारित्रात्माएं खरनोटा में लंबा प्रवास उन्हीं के निवास स्थान में करते थे। इस कारण पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। उनके सुपुत्र बड़ौदा-सूरत एवं बेंगलुरु में प्रवासित हैं। वहां भी सेवा-उपासना का अच्छा लाभ लेते हैं। पूरे बोल्या परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था है।

**नवीन घोषित चातुर्मास**

| | | | |
|---|---|---|---|
| १. मुनिश्री सुरेशकुमारजी | गंगापुर | २. साध्वी संयमश्रीजी | भीनासर |
| ३. साध्वी संयमप्रभाजी 'हांसी' | उचाना मण्डी | ४. साध्वी सरोजकुमारीजी | नरवाना |
| ५. साध्वी सुप्रभाजी | सिरसा | ६. साध्वी गुणमालाजी | उदयपुर |

**विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

**ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध**

•

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला